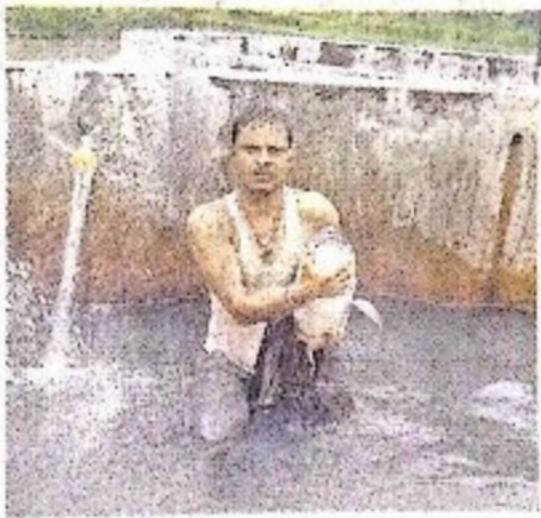


कभी 50 हजार था सपना, आज कमा रहे 20 लाख

पंकज कुमार सिंह पटना
@pankjksingh123

हौसला बुलंद हो तो सफलता कदम चूम लेती है। सामान्य परिवार का युवक अशोक सिंह कभी साल भर में 50 हजार रुपए कमाने की कल्पना नहीं कर सकता था। आज मछलीपालन से बह प्रतिवर्ष 15 से 20 लाख रुपए कमा रहा है। मछली उत्पादन के लिए केंद्रीय अंतस्थलीय मालिन्यकी अनुसंधान संस्थान बैरकपुर में परिचय बंगल ने 2010 में उन्हें गुरुत्वात् पुरस्कार से सम्मानित किया है।

मधुबनी जिले के दहिया खैरवार के अशोक ने सफलता की ऐसी कहानी लिखी, जिससे अन्य लोग भी प्रेरित हो रहे हैं। अन्य युवक भी मछलीपालन से लाभ कमाने लगे हैं। इससे बिहार के कई जिलों के मछलीपालकों को आसानी से मछली बीज मिल रहा है। पहले बीज के लिए लोगों को परिचय बंगल व अन्य राज्यों पर निपर रहना पड़ता था।



**दूसरों
को भी
सिखा
रहे**

यहाँ 5 मत्स्य-हैंचरी की स्थापन हो गई है। दो दूसरे किसानों को मत्स्यपालन का गुर भी सिखाते हैं। अशोक छाते हैं कि बचपन से ही उन्हें मछलीपालन का शौक था। 2001 में मछलीपालन शुरू किया। फिर बाद में कूसारी हैंचरी के ट्यूब लाकर नहीं की तर्की शुरू किया। 2004 में उन्होंने मत्स्य हैंचरी की नींव रखी और 2007 से उत्पादन शुरू हुआ। एहले तो बैंक से लोन मिलने में परेशानी होती थी, लेकिन बाद में उन्हें 14.50 लाख रुपए लोन मिला, जिससे उन्होंने फर्म का विस्तार किया।

22 तालाब के हैं मालिक

आज उनके फर्म का कुल क्षेत्रफल 55 एकड़ है, जिसमें 15 एकड़ अपना निजी तालाब है एवं 40 एकड़ तालाब जगीज मालिकों से वार्षिक रिट्टा पर हैं। जिसी तालाबों के लिए उन्हें प्रति हेक्टेयर 30.40 हजार रुपए वार्षिक रिट्टा के रूप में देना पड़ता है। उनके पास अब 22 तालाब हैं, जिसमें दो बड़े तालाबों में प्रजनक मछलियों की रखते हैं और शेष में नहरी हैं। हैंचरी में टेल, कतला, मृगल, धाल कार्प, रिल्वर कार्प एवं कॉमल कार्प का स्पॉन उत्पादन होता है। इससे मुजफ्फरपुर, काशीया, मधुबनी, समस्तीपुर, पैशाली आदि जिलों के नहली पालकों को सालों भर नहली बीज भित्ति जाता है। अपनी कार्मा ई से उन्होंने 5 एकड़ जगीज खरीद कर फर्म का विस्तार किया है।

मछली ये साथ अशोक कुमार।